कला के कौतुकी रंग

कला-क्रिया मानव जीवन का एक अभिन्न अंग है अथवा कला उतनी ही वैविध्यपुर्ण है जितना जीवन। कोई ऐसी विशेषता, जो उन सब क्रियाओं में समान रूप से पायी जाती हो, उन्हें कला कहा जाता है। कला बौद्धिक तथा सांस्कृतिक कार्यों के संपादन का कौशल है, कला ही युग धर्म है जो प्रत्येक चरित्र की ऐतिहासिकता का बोध कराती है।

राम के आदर्शपूर्ण चरित्र और रामायण के प्रसंगों में शिल्पियों का योगदान महत्वपूर्ण रहा है। संभवत: उन्होंने राम के आदर्शों से प्रेरित हो तत्कालीन समाज को शालीन और सशक्त बनाने के लिए सरलतम साधन का उपयोग कर मृणमूर्तियों में राम की आकृतियों को रूपायित किया। राम प्रसंग की मृणमूर्ति दो शताब्दी ईसा पूर्व कौशांबी से प्राप्त हुई है, जिसमें रावण द्वारा सीता हरण प्रसंग का दृश्य अंकित है। दशरथ जातक (बौद्ध) पर आधारित मृणमूर्ति नागार्जुन कोंडा (तीसरी शताब्दी) से प्राप्त हुई, जिसमें 'राम-सीता के वनगमन का प्रसंग रूपायित है। गुप्त सम्राटों (320-550 ई.) के समय में भारतीय कला को एक नया आयाम मिला। महाकवि कालिदास ने भी इसी काल में रघुवंश की रचना कर राम की कीर्ति को और बढ़ाया। वास्तव में गुप्तकाल साहित्य, कला, संस्कृति एवं शालीनता का एकाकी प्रतिनिधि रहा है। इस काल की महत्वपूर्ण मृणमूर्तियां काक जयंत एवं अहिल्या उद्धार हैं, ये दोनों कृतियां राष्ट्रीय संग्रहालय, नयी दिल्ली में संग्रहीत हैं शृंगवेरपुर युद्ध से प्राप्त राम-लक्ष्मण एवं सुग्रीव की एक अन्य मृणमूर्ति भी उस काल की प्रचलित कला का अनुपम उदाहरण है। गुप्तकालीन शिल्पकारों ने इस प्रयास से प्रेरित होकर शिल्पों में भी राम तथा रामायण के प्रसंगों की अनुपम आकृतियों का निर्माण किया, जो आज भी एलोरा की गुफाओं में रावण की अनुग्रह मूर्ति के रूप में प्रतिष्ठित हैं।

गुप्तकालीन देवगढ़ (ललितपुर) का दशावतार मंदिर, जिसमें रामायण की विविध झांकियों को पत्थरों में उकेरा गया है, आज भी अपने कला चातु से दर्शकों

को प्रभावित किये बिना नहीं रहता। इसी प्रकार ऐहोल (कर्नाटक) के दुर्गा मंदिर में रामायण के प्रसंगों को पत्थर में उकेरा गया है। आठवीं शताब्दी में निर्मित ऐलोरा के कैलाश मंदिर में रामायण के दृश्यों का अंकन राम में शिल्पियों की निष्ठा का अनुपम उदाहरण है। इसी अवधि में निर्मित पहाड़पुर (बंगलादेश) मंदिर राम को समर्पित है। दक्षिण भारत में विशेषकर होयसिला मंदिरों में हेलाबिड, वैलूर और अमृतसर तथा सोमनाथपुर के मंदिरों में राम सम्बंधी विषयों का अंकन दर्शनीय है। रामायण के दृश्य बारहवीं शताब्दी में वारंगल (आंध्र) जिले के मंदिरों में भी उकेरे गये थे।

मृणमूर्तियों, शिल्प एवं मंदिर स्थापत्य के अतिरिक्त दक्षिण भारत के चोल, पल्लव काल के शिल्पियों ने कांस्य प्रतिमाओं में राम-सीता की साकारता को जीवंत कर दिया। कहीं-कहीं काष्ठ, हाथीदांत पर भी इनके प्रयास अभिनव रहे हैं। कपड़े पर भी रामायण के दृश्य अंकित हुए। कुल्लू के राजा जगत सिंह द्वितीय (1637-1672) ने भी सुल्तानपुर में रघुनाथ के मंदिर का निर्माण कर उन्हें राज्य समर्पित कर राज्य की देखरेख में अपना जीवन व्यतीत किया। इसी प्रकार का एक अन्य उदाहरण ओरछा राज्य का है, जहां की रानी गणेश कुंवर ने राम राजा को अयोध्या से ला कर ओरछा में प्रतिष्ठित किया था। उसके पति राजा मधुकर शाह ने भी ओरछा राज्य राम राजा को समर्पित कर उसकी देखरेख में शेष जीवन व्यतीत किया। इन तथ्यों के अतिरिक्त 16वीं शताब्दी के चेंगम (दक्षिण भारत) के अर्जुनसारथी एवं थेरुविलराय के मंदिरों की दीवारों पर भी रामायण का चित्रण हुआ है।

14 वीं शताब्दी में कागज का आविष्कार हो जाने पर चित्रकारों ने विविध रंगों का उपयोग कर इस क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान दिया। लघु चित्रों में राम तथा रामायण के प्रसंगों का अंकन यहीं से आरंभ हुआ, जिसका प्रमाण है अकबरकालीन (1556-1605) बाल-गोपाल स्तुति (पांडुलिपि)। इसमें रामायण के अनेक प्रसंगों को चित्रित किया गया है। इस पांडुलिपि के पृष्ठ विश्व में अनेक स्थानों पर संग्रहीत हैं। सल्तनत कालीन साहित्यिक स्रोतों से प्रमाणित होता है कि उस काल में भित्ति चित्रण में रामायण के दृश्यों का अंकन कर दीवारों को सजाया जाता था।